अभिलाषा

- **सतीश कुमार कश्यप**
संदेशवाहक

अर्चना के फूल है हम, फूल बन चढ़ते रहे हैं,
साधना में, साधना सी, साधना करते रहे हैं ।

हार कर भी जीत को, जो जयमाला पहनाते खुशी से,
जीत उनकी, अनुचरी वे हार से लड़ते रहे हैं,
साधना में साधना सी, साधना करते रहे हैं ।
अर्चना के फूल है हम, फूल बन चढ़ते रहे हैं,
जीत पर यदि उड़ चले है, तो हार पर गिरते नहीं हैं ।।

ध्येय उनका, लक्ष्य उनका जीत को पाना नहीं है ,
बस समझ ले जीत क्या है, हार क्यों मिलती हमे हैं ।
जीत से गर सपने जगे हैं, तो हार में क्या रस नहीं है,
हम समेटे हार को, बस स्वयं चलते रहे हैं ।

साधना में साधना सी, साधना करते रहे हैं,
अर्चना के फूल है हम, फूल बन चढ़ते रहे हैं ।।

* * * * *